

महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

०८/१०/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा सतगुरु जी को नमस्ते। परमात्मा सतगुरु जी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं अपने मूलस्वरूप स्थिति में स्थित हो जाएं... सभी देखें अपना मूलस्वरूप.. कुछ क्षण के लिए अपने मूलस्वरूप का सभी अनुभव कीजिए... अभी सभी आत्माएं अपने लाइट को देखें.. कुछ क्षण के लिए अपने लाइट को देखते रहिए...

अभी कुछ क्षणों के लिए आप आत्मा की लाइट को आप आपके ब्रेन में, मस्तिष्क में फैलाएं.. देखिए, आप आत्मा से लाइट निकलकर आपके ही मस्तिष्क में जा रही है.. आपके ब्रेन के अंदर के हर एक सेल में, आप आत्मा की लाइट जा रही है.. हर एक न्यूरोन में आप आत्मा की लाइट फैल रही है.. कुछ क्षणों के लिए आप आत्मा की लाइट को आपके समस्त ब्रेन में, मस्तिष्क में फैलाना...

अभी आप आत्मा से लाइट आपके स्थूल आंखों में फैल रही है — यह देखना.. आप आत्मा की लाइट आपके दोनों नेत्रों में जा रही है... अभी आप आत्मा की लाइट, आपके स्थूल कर्मेन्द्रियां कान है, उन दोनों कानों में फैल रही है — यह देखना, इसका अनुभव करना.. आप आत्मा से लाइट आपके दोनों कानों में जा रही है... अभी आप आत्मा की लाइट, आपका जो सांस लेने का स्थूल कर्मेन्द्रिय है नाक, उस स्थूल कर्मेन्द्रिय तक आप आत्मा की लाइट फैल रही है — यह देखें.. आत्मा से लाइट का फोकस, टॉच आपके नाक तक, वह लाइट पहुंच रही है...

अभी देखें, आप आत्मा की लाइट आपके मुख तक पहुंच रही है.. सभी देखें, आप आत्मा की लाइट, आपके शरीर के दोनों हाथों में जा रही है.. आत्मा से लाइट की किरणें, दोनों हाथों में फैल रही

हैं... अभी देखें, आप आत्मा की लाइट आपके शरीर के दोनों पैरों तक फैल रही है.. देखिए, आप आत्मा से लाइट का फोकस आपके शरीर के पैरों में जा रहा है — अनुभव करें...

अभी देखें, आप आत्मा की लाइट आपके संपूर्ण शरीर में फैल रही है.. आप आत्मा से लाइट की किरणों, आपके शरीर के हर एक सेल तक पहुंच रही हैं... आप आत्मा की लाइट से, आपके शरीर में लाइट आ गयी है.. महसूस करें, आपका शरीर हल्का हो रहा है...

आज का यह जो अभ्यास सभी ने किया उससे क्या हुआ? उसका परिणाम क्या है? यह भी आपको समझना जरूरी है। जब-जब आप आत्मा, आप आत्मा की लाइट को मस्तिष्क में फैलाते हैं, तो मस्तिष्क के अंदर, ब्रेन के अंदर जो कुछ भी आपकी नेगेटिव ऊर्जा वहां पर उपस्थित है या स्टोर है, वह सारी ऊर्जा की क्लीनिंग होती है। सबसे पहले आत्मा की लाइट हम शरीर के जिस भी कर्मेन्द्रियों में फैलाते हैं, वहां से हर प्रकार की नेगेटिव ऊर्जा को क्लीन कराते हैं।

और जैसे-जैसे आप आपके हर एक-एक कर्मेन्द्रियों में आत्मा की लाइट को फैलाते जाएंगे, उतना जल्दी हर एक कर्मेन्द्रिय से हर प्रकार की जो पुरानी मायावी ऊर्जा है, वह ऊर्जा भी मुक्त हो जाती है। आप नहीं जानते कि आत्मा की लाइट आप आपके शरीर के किसी भी कर्मेन्द्रियों में फैलाने से उसकी किस-किस प्रकार की शुद्धि होती है। जब-जब ब्रेन के अंदर आप, आप आत्मा की लाइट को फैलाते हैं, आपके ब्रेन के न्यूरोन्स की रीवायरिंग होती है।

कभी-कभी किसी को यह लगता है कि हमें कोई-कोई बातें समझ में नहीं आती, हम चाहते हैं कि हमें जल्दी समझ में आ जाए। तो समझ जो शक्ति है, उसका कनेक्शन सबसे पहले आप आत्मा की जो सूक्ष्म कर्मेन्द्रिय है बुद्धि, उससे है। जितनी आपकी बुद्धि शुद्ध होगी, उतनी सारी बातें आपको जल्द समझ में आएगी। फिर आपकी बुद्धि से डेटा, ब्रेन में न्यूरोन से ट्रांसफर होता है। पर आपके ब्रेन के न्यूरोन में ऑलरेडी अलग-अलग प्रकार का डेटा स्टोर है, अलग-अलग प्रकार की ऊर्जाएं स्टोर हैं। बुद्धि जितनी शुद्ध, उतना आगे ब्रेन प्रोसेसिंग में उस बात को ले पाएगा।

इसलिए सभी को अपने आत्मा की लाइट को, आपके ब्रेन के अंदर रोज फैलाना ही चाहिए। उससे आपके न्यूरोन की क्लीनिंग होगी, ब्रेन के हर एक सेल की क्लीनिंग होगी और ब्रेन के अंदर ऊर्जा के रूप में जो कुछ भी विपरीत ऊर्जाएं स्टोर हैं, उन सब की क्लीनिंग होगी। फिर अगर आपकी बुद्धि शुद्ध है और आपका हार्डवेयर प्रोसेसर ओके है, तो आपके बुद्धि द्वारा दी जाने वाली कमांड को, ब्रेन के द्वारा एक्ज्यूटेडली प्रोसेस होके, आपके कर्मेन्द्रियों से वह सारी कर्म की क्रियाएं एक्ज्यूटेडली हो पाएंगी।

बुद्धि — एक लौकिक रूप से समझाने के लिए बता सकते हैं — वह एक सूक्ष्म सॉफ्टवेयर है। ब्रेन आपका प्रोसेसर, हार्डवेयर है। उसके बाद आपके जो भी कर्म-इंद्रियां हैं, उन सभी का भी ओके होना जरूरी है। क्योंकि आत्मा से बुद्धि को सिग्नल मिला, बुद्धि से ब्रेन हार्डवेयर में पहुंच गया वाया न्यूरोन। अभी आगे जिन-जिन कर्मेन्द्रियों का जहां पर कार्य में लगना है, वह सारी कर्मेन्द्रियां भी ठीक होना जरूरी है।

अगर किसी को कभी लगता है कि हमारे हाथों से यह कर्म जितना स्पीड में होना चाहिए वो हो नहीं रहा है — एक उदाहरण के तौर पे आपको बताया जा रहा है — कि आपके हाथों में उस कर्म को करने के संस्कार नहीं हैं। पर आप आत्मा चाहती है कि आपके हाथ उस प्रकार से, उस गति से वह कर्म करें। आपकी बुद्धि भी चाहती है कि हाथों द्वारा उस प्रकार से कर्म होने चाहिए। फिर हाथ क्यों नहीं कर पाते? क्यों वह संस्कार हाथों में नहीं आ पा रहा है?

तो उसके लिए, आप आत्मा को कॉन्ससियसली आपके हाथों को आप आत्मा से लाइट देनी होगी, तभी आपके स्थूल कर्मेन्द्रियां हाथ रूपी, उनके संस्कार परिवर्तन होना शुरू हो जाएंगे। आप आत्मा से हर एक कर्मेन्द्रियों को सदैव लाइट मिलती है, पर अनकॉन्ससियसली। आप आत्मा शरीर में उपस्थित हो, उस ही के कारण आपके शरीर के सभी कर्मेन्द्रियां और हर एक सेल जीवित है और कार्यरत है, क्योंकि आप आत्मा से सदैव ऊर्जा उनको मिलती रहती है। एक है आत्मा की ऊर्जा अनकॉन्ससियसली ऑटो में सबके पास पहुंच जाना, और एक है कॉन्ससियसली आपको आपके हर एक कर्मेन्द्रियों को आत्मा की

लाइट को पहुंचाना, आप आत्मा की लाइट को हर एक कर्मेन्द्रियों में फैलाना। ऊर्जा ऑटो में पहुंच रही है, और एक है लाइट को आपको फैलाना है — दोनों भी बातें अलग-अलग हैं।

बिना आत्मा के शरीर नहीं चल सकता, क्योंकि आत्मा की ऊर्जा पहुंचकर हर एक सेल में वह कार्य करती रहती है। पर आपको आपके कर्मेन्द्रियों में अगर परिवर्तन चाहिए, तो आपको आपके हर एक कर्मेन्द्रियों में कॉन्ससियसली बैठकर, कुछ क्षणों के लिए लाइट को रोज फैलाना ही होगा। जितना-जितना आप आपके हर एक कर्मेन्द्रियों में लाइट फैलाओगे, यह लाइट सिर्फ आपको आपके स्थूल कर्मेन्द्रियों में ही नहीं फैलती, वह सबसे पहले आपके सूक्ष्म शरीर के उन कर्मेन्द्रियों में फैलती है और जितना-जितना आप आत्मा, आप आत्मा के लाइट को पूरे शरीर में फैलाते जाएंगे, उतना ऑटो में आप आत्मा के सूक्ष्म शरीर का और क्लीन होता जाएगा।

आप मान लो कहां बाहर से, मार्केट से आए, घर पर पहुंचे, सबसे पहले आपको आपके सभी कर्मेन्द्रियों में आप आत्मा से लाइट को कॉन्ससियसली फैलाना चाहिए। इससे आप जो बाहर कहां मार्केट से जाकर आए हो, वहां की ऊर्जा की सबसे पहले क्लीनिंग होगी। क्योंकि आप जहां से भी चल कर आते हो, किसी के संबंध-संपर्क में आते हो, किसी के साथ व्यवहार करते हो, यहां तक आपकी दृष्टि किसी के भी ऊपर जाती है, उन सब की ऊर्जाएं आपके सूक्ष्म शरीर में औरा के रूप में ठहर जाती हैं और वह तब तक ठहरती हैं जब तक आप उसकी क्लीनिंग ना करो और आप आत्मा की अगर स्थिति कमजोर है, तो बहुत जल्दी आप इन सभी ऊर्जाओं से प्रभावित होते जाओगे। आपको नहीं समझ में आएगा कि आपके शरीर में दर्द कहां से शुरू हुआ, आपके सिर में दर्द कहां से आया।

यह जो दर्द है, यह दर्द की ऊर्जा फिर शरीर के किसी भी अंग में हो, वह एक ऊर्जा जो कि कहीं बाहर से आप किसी के संबंध-संपर्क में आए हो उनसे आती है, या फिर आप ही के किन्हीं जन्मों के कार्मिक अकाउंट से वो आपके शरीर में उत्पन्न हो जाती है, या फिर आपने जो मन के द्वारा अननेसेसरी विचार चलाए हैं, सोच चलाई है, उससे भी आप आपके सूक्ष्म शरीर में विपरीत ऊर्जा को निर्माण कराते

हो। फिर वही ऊर्जा कहीं शरीर के किसी ऑर्गन में, सबसे पहले सूक्ष्म ऑर्गन में जाके अटक जाती है और फिर वो दर्द स्थूल शरीर में आपको फील होता है। फिर आप कहते हो कि शरीर में यहां-यहां दर्द हो रहा है। क्योंकि ऊर्जा अटकी है — या तो बाहर से किसी के संबंध-संपर्क से, कोई स्थान से आप घूम कर आए हो, वहां से ऊर्जा लेके आए हो, वह वो ऊर्जा हो सकती है; या फिर आपके किन्हीं जन्मों के कार्मिक अकाउंट इस समय पे सामने खड़े हुए हैं, उसके कारण यह ऊर्जा क्रिएट हुई है; या फिर आपने अननेसेसरी एक्स्ट्रा थॉट्स चला-चलाकर आप ही ने ऊर्जा का निर्माण कर दिया है और यह दर्द तब तक होगा, जब तक आप उस ऊर्जा को कॉन्ससियसली आप आत्मा से लाइट नहीं फैलाओगे, आपके उन-उन कर्मेन्द्रियों में तब तक यह दर्द रहेगा।

इसलिए आपकी आत्मा की लाइट सबसे बड़ी आपके शरीर की हीलर है। कभी भी कोई भी अनुभव करें — आपके शरीर में कोई भी तकलीफ हो, आप कॉन्ससियसली आत्मा से लाइट, वहां पर फैलाना शुरू कर दो। आप ही के हाथ में है, सदैव आपका सूक्ष्म शरीर का औरा को ठीक रखना। इसलिए किसी के भी संबंध-संपर्क में आते, आपको सबसे पहले एक ही बात का ध्यान रखना है — आप आत्मा सामने वाले आत्मा से व्यवहार कर रही है, ना कि किसी देहधारी से, पद-पोजीशन वाले से किसी से आप बात कर रहे हो।

जब-जब आप आत्मा सामने वाले की भ्रुकुटी में देखकर आत्मा से बात करते हो, तब-तब आपको सामने वाले की ऊर्जा कैसी भी हो — अच्छी हो या विपरीत हो, आपसे ज्यादा हो या कम हो — पर किसी भी रूप से सामने वाले की ऊर्जा आपके ऊपर कभी भी प्रभावित नहीं हो सकती। क्योंकि आप आत्मा लाइट के रूप में रहकर सामने वाले को लाइट ही देख रहे हो। तो जब लाइट ही लाइट से व्यवहार कर रही है, बात कर रही है, तो आपकी लाइट सदैव सेफ रहेगी। आपका सूक्ष्म शरीर, स्थूल शरीर सदैव सेफ रहेगा।

एक है कि आपको कॉन्ससियसली आपके शरीर की क्लीनिंग कराना आत्मा के लाइट को फैलाकर, और दूसरा है सबसे पहले प्रिकॉशन लेना कि “मैं आत्मा, आत्मा से ही व्यवहार करूंगी।” फिर किसी भी रूप से कोई भी प्रकार की ऊर्जा किसी से भी आपके पास नहीं आएगी। इसलिए संगमयुग में आप आत्माओं के पास खुद का ही कार्मिक अकाउंट का कोटा बहुत ज्यादा है। इसलिए संगमयुग में आपको उसको चुकू तो करना ही है, साथ ही साथ आपको आपका कल्याण और आप आत्मा का परिवर्तन भी करना है।

इसलिए संगमयुग में सिर्फ आत्मिक व्यवहार को ही महत्व है। क्योंकि जब-जब आप आत्मिक व्यवहार में चलते हो, आप एक्स्ट्रा कार्मिक अकाउंट का बोझा क्रिएट नहीं करोगे। ऑलरेडी आपको आपका चुकू करना है और आप अगर बॉडी-कॉन्ससियसनेस स्टेट में रहकर, सामने वाले को भी देह समझकर उससे व्यवहार में आएंगे, सामने वाले की ऊर्जा, मायावी ऊर्जा आपको प्रभावित करेगी। आपकी स्थिति और नीचे चली जाएगी और आपको आपका कार्मिक अकाउंट सेटल करना है, तो एक बार आपकी स्थिति नीचे चली गयी, फिर उसे ऊपर उठाने में आपको प्रयास करने पड़ेंगे।

इसलिए संगमयुग में सदैव आत्मिक व्यवहार में ही चलने में, आप आत्मा का और सामने वाले आत्मा का भी कल्याण है। जितना-जितना आप आत्मिक व्यवहार में चलेंगे, उतना जल्दी आपके उन सबसे कार्मिक अकाउंट तेजी से चुकू हो जाएंगे। इसलिए संगमयुग यह एक ही युग है, जहां पर सभी आत्माओं को कॉन्ससियसली अपने मूलस्वरूप स्थिति में रहकर हर कर्म करने जरूरी हैं, हर व्यवहार करना जरूरी है, हर संबंध-संपर्क में आते उस स्थिति में स्थित रहना जरूरी है। क्योंकि उस ही स्थिति से जल्द से जल्द आपके कार्मिक अकाउंट सेटल होते हैं और आप आत्मा का परिवर्तन शुरू होता है, जो कि संगमयुग का हर एक आत्मा का लक्ष्य है — आत्म-कल्याण और आत्म-परिवर्तन।

जब-जब आप आत्मा चाहते हो कि आप आत्मा से बहुत अच्छा पुरुषार्थ हो जाए, तपस्या हो जाए, सबसे पहले आप आत्मा को आपके शरीर को लाइट देने की आवश्यकता है। क्योंकि तपस्या करने के

लिए आपका शरीर ही साधन है। जितना आपका शरीर स्वस्थ होगा, उतना आप आत्मा तेजी से पुरुषार्थ कर पाएंगी, गहराई से तपस्या कर पाएंगी। इसलिए कभी भी पुरुषार्थ या तपस्या करने में बैठने से पहले, कुछ क्षणों के लिए आप आपके सभी कर्मेन्द्रियों में और आपके संपूर्ण शरीर में, आप आत्मा से कॉन्ससियसली लाइट को फैलाना। उससे आपका शरीर उस दिन की तपस्या के लिए आपको सहयोग दे पाएगा। आप आत्मा तो बहुत कुछ कल्याण अर्थ, आपके परिवर्तन अर्थ करना चाहती है, पर आप आत्मा को लगता होगा शरीर साथ नहीं दे रहा। तो बस यह विधि अपनाओ, अपने शरीर को सहयोगी बनाओ और आप आत्मा आपकी आत्म-कल्याण की और आत्म-परिवर्तन की तपस्या में लग जाओ। क्योंकि समय कम है, कम समय में बहुत कुछ करना बाकी है। इसलिए सभी आत्माओं के पास जो भी तन है इस संगमयुग में, सभी सर्वश्रेष्ठ है। बस आप आपके देह को लाइट देकर, चार्ज कर कर चलना सीखो, वह मदद जरूर करेगा। अगर आप आत्मा की दिल की चाहना है, तो सभी सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियां आपको मदद अवश्य करेगी। बस रोज इन्हें कुछ क्षणों के लिए लाइट देते जाना आप आत्मा से। शरीर की सारी सिस्टम ओके रहेगी, तो आत्मा भी अच्छे से पुरुषार्थ करेगी। यह हुआ पुरुषार्थ के लिए एक एंगल।

दूसरा है कि शरीर साथ दे या ना दे, पर आत्मा को अगर दिल की चाहना है, तो आत्मा किस भी परिस्थिति में, भल बेड पर लेटे ही सही, अपनी तपस्या अवश्य कर सकती है। कभी भी कोई भी तपस्या के लिए कारण नहीं दे सकते। क्योंकि अगर आपने संगमयुग में आपके कल्याण और आपके पुरुषार्थ के लिए, आपके परिवर्तन के पुरुषार्थ के लिए कारण दिया, तो अंत में आपको आपके अगले कल्प के पद के लिए, पाठ के लिए बड़ा कारण मिल जाएगा कि आप उस अवस्था में क्यों नहीं आ पाए। इसलिए सभी आत्माएं — शरीर ठीक हो या ना हो — अपने आत्म-कल्याण की और आत्म-परिवर्तन की यात्रा को सदैव चालू रखना।

शरीर एक साधन है, उसको भी आप आत्मा को चलाना आना चाहिए। ऐसे नहीं चलेगा कि “हमसे तो नहीं बैठा जाता, हमसे तो इतना समय पुरुषार्थ नहीं किया जाता, हम तो शरीर को स्थिर करके बैठ ही

नहीं सकते।” यह सब कारण हैं आपके माया के। इसलिए जब कभी तपस्या में, आत्म-कल्याण के पुरुषार्थ में शरीर को बिठाओगे, सबसे पहले सभी के सभी स्थूल कर्मेन्द्रियों को, सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों को, संपूर्ण शरीर को आप आत्मा से लाइट अवश्य फैलाना। फिर जो शरीर के अंदर मायावी बातों की अस्थिरता है, वह भी मुक्त हो जाएगी। कोई भी इसे अनुभव कर सकते हैं। हर कोई अपने से चेक करे कि आप आत्मा आत्म-कल्याण और आत्म-परिवर्तन के पुरुषार्थ के लिए या किसी भी प्रकार की तपस्या के लिए आप कितना समय आपका शरीर स्थिर रख सकते हो? हर कोई अपनी चेकिंग करे। आपका आपके शरीर के ऊपर कितना समय तक कंट्रोल है कि वो आपको कितने समय तक तपस्या के लिए सहयोग देता है या दे सकता है? और आप आत्मा अगर चाहती हो कि शरीर और अच्छे से सहयोग दे, तो रोज संपूर्ण शरीर को लाइट फैलाने की विधि अवश्य करें। धीरे-धीरे आपका शरीर आप आत्मा को तपस्या के लिए, पुरुषार्थ के लिए सहयोग अवश्य देता जाएगा।

तो सभी यह चेक करें — कि अभी इस समय में आपका शरीर तपस्या के लिए, कितने समय तक आपको स्थिर रहकर साथ देता है और आप आत्मा से लाइट फैलाने की आपके शरीर में उस विधि से, आपका शरीर आपको तपस्या के लिए कितना समय तक सहयोगी बन सकता है? हर कोई अपनी चेकिंग करे।

संगमयुग बहुत, बहुत, बहुत मूल्यवान युग है। इसलिए इस युग का हर एक समय, इस युग का, इस युग में आपको जो-जो आपके पास अभी है, वह सब कुछ बहुमूल्य है। इसलिए आपके पास जो कुछ भी है सूक्ष्म और स्थूल रूप से, उन सभी बातों को, आप आत्मा आपके आत्म-कल्याण के और आत्म-परिवर्तन के पीछे लगाना। परमात्मा ने आपको जो कुछ भी आपके पिछले कल्प के पुरुषार्थ अनुसार आपको दिया है, आपको प्राप्त हुआ है, परमात्मा की शुक्रगुजार रहना और उस सभी से आप सदैव इस संगमयुग में एक ही ध्यान रखना — कि जो कुछ भी मेरे पास व्यवस्था है, वह सब कुछ मुझे मेरे आत्म-कल्याण के और आत्म-परिवर्तन के पीछे लगाना है, किसी भी रूप से और मायावी संसार में नहीं अटकना

है। क्योंकि यह युग गया, तो आप आत्मा कुछ भी हासिल नहीं कर पाएंगी किसी भी युग में। इसलिए इस संगमयुग में कुछ करना है, तो सिर्फ त्याग — त्याग करते जाएंगे, तभी तपस्या कर पाएंगे। बिना त्याग के ना तपस्या होगी और ना ही परिवर्तन होगा।

सभी अपनी चेकिंग अवश्य करें। आपके पास हर दिन २४ घंटे हैं, उस हर सेकंड को आपने कैसे सफल किया, कैसे व्यतीत किया। यह संगमयुग — जिसमें अनंत यूनिवर्स के रचयिता परमात्मा आए हैं — ऐसा संगमयुग दोबारा कभी भी, कहां पर भी इस प्रकार से नहीं होगा। इसलिए इस संगम में जिसने अपना पूर्ण परिवर्तन किया, उसने सब जीत लिया। सभी ध्यान दें।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः

सभी आत्माएं जल्द से जल्द जागृत हो जाएं अपने कल्याण अर्थ, अपने परिवर्तन अर्थ।